Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

'हैरी कब आएगा' में दलित चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति

डॉ.अमितभाई एन. पटेल*

समकालीन कहानी नई कहानी के विकास का अगला चरण है । समकालीन कहानी के प्रारंभिक वर्षो से हमारे देश में व्यक्ति की जीवन स्थितियाँ बहुत तेजी से बदली । समकालीन कहानी में जीवन यथार्थ का कोई भी अंग अनछुआ नहीं रहा है । जो आज के मनुष्य ने जिस-जिस रूप में जिंदगी को देखा, भोगा उस सबका प्रमाणित दस्तावेज समकालीन कहानी प्रस्तुत करती है । समकालीन कहानीकार अपने वर्तमान में जो देख या भोग रहा है उसे पूरी शिद्दत से कहानी में उतार रहा है । वह मनुष्य की बौद्धिक चेतना को झकझोर और झिंझोड़कर उन कारणों पर विचार करने के लिए बाध्य करता है जो उसकी उस वर्तमान स्थिति के लिए उत्तरदायी है । यथार्थ के विभिन्न कोठों से समकालीन कहानीकार अपनी कहानी में जी रहा है । जितनी तेजी से जीवन स्थितियाँ बदल रही हैं, उतनी ही तेजी से समकालीन कहानी का यथार्थ और सच्चाईयाँ बदल रही है । समकालीन कहानी में जीवंतता, प्रगतिशीलता, परिवर्तनशीलता तथा जिजीविषा का भाव सन्निहित है । समकालीन कहानी में जीवन की विषमताएँ संप्रेषित हुई है। समकालीन कहानी की चेतना स्वातंत्र्योत्तर भारतीय यथार्थ की चेतना है और यह चेतना कलाकारों के अनुभवों से जुड़ी होने के कारण अनेक रुप और रंग धारण करती है । अर्थात् समकालीन कहानी की चेतना परिवेश से जुड़े हुए व्यक्ति मन की चेतना है । इसलिए वह न तो बाहरी यथार्थ की अनूभूतिहीन फार्मुलाबद्ध कथा कहती है और न बाहरी परिवेश से विच्छिन्न होकर या बाहरी परिवेश को केवल अवचेतन की दुनिया से संदर्भित कर मात्र व्यक्ति-मन का चित्रण करती है । वह जीवन-परिवेश को केवल दबाव में बनते बिगड़ते मानवीय रिश्तों, मूल्यों, संवेदनों की अभिव्यक्ति है ।

हिन्दी दलित साहित्य की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति दलित कविताओं में हुई है । कविता कहानी की तुलना में अधिक लिखी गई है । लेकिन पिछले दो दशक में प्रकाशित हिन्दी दलित साहित्य में कहानी संग्रहों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है । जिसमें दलित चेतना के विकास में योगदान देने वाले संग्रहों में प्रमुख हैं - 'समकालीन कहानियाँ'- सं.डॉ.कुसुम वियोगी, 'आवाजें'- मोहनदास नैमिशराय, 'सुरंग' - दयानंद बटोही, 'पलास के फूल'- प्रह्लादचंद दास, 'अनुभूति के घेरे- सुशीला टाकभौरे, 'दलित समाज की कहानियाँ'- रत्नकुमार सांभरिया, 'हैरी कब आएगा'- सूरजपाल चौहान आदि । सूरजपाल चौहान एक प्रसिद्ध दलित कथाकार है ।

---

*डॉ.अमितभाई एन. पटेल, जीएलएस (सद्गुणा एण्ड बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स, अहमदाबाद ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

दलित कहानी को आगे बढ़ाने में सूरजपाल चौहान का विशेष योगदान रहा है । दलित कहानी को नए आयाम और विद्रोह के तेवर देने में वे प्रयासरत हैं । उनकी कहानियाँ इस बात को रेखांकित करती है कि दलितों को गुलामी से मुक्ति का दंश भी झेलना पड़ता है । उनकी लगभग सभी कहानियों में परिवर्तन और चेतना की बात उभर कर आती है, जो दलित साहित्य का उद्देश्य भी है । सूरजपाल जी का कहानी संग्रह 'हैरी कब आएगा' सन् १९९९ में प्रकाशित हुआ, इसके अतिरिक्त इनकी अन्य कहानियाँ - बदबू, बहु रूपिया, बस्ती के लोग, तीन चित्र, अविष्कार, सारे जहाँ से अच्छा आदि प्रकाशित हो चुकी है । अन्य कृतियों में कविता संग्रह - 'प्रयास' (१९९४),'मेरा गाँव एवं अन्य कविताएँ' (२००३), 'क्यों विश्वास करूँ' (२००३), बाल कविताँ - 'बच्चे सच्चे किस्से' (२००१), आत्मकथा -'तिरस्कृत' (२००२) आदि प्रसिद्ध है । प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने ६ जनवरी २००३ के ' आउटलुक' साप्ताहिक में 'तिरस्कृत' को वर्ष २००२ की हिन्दी की पाँच सर्वश्रेष्ठ कृतियों की सूची में स्थान दिया है।

सूरजपाल जी लिखित 'हैरी कब आएगा' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में दलित-पीड़ित समाज का संघर्ष है । तथा दलितों जीवन की जमींनी हकीकत प्रस्तुत हुई है । यह कहानीसंग्रह दलित जीवन से सीधा साक्षात्कार करवाता है । सूरजपाल जी ने दलितों के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की यथार्थता मार्मिकता से प्रस्तुत की है । धर्म का प्रयोग करके किस प्रकार सवर्ण दलितों का शोषण करते है उसका चित्रण चौहान जी ने अपनी कहानियों में किया है । हिन्दू धर्म के अनुसार गाय को माता माना जाता है । गाय का दूध, मक्खन खाना पवित्रता का द्योतक है, पर जब वह मर जाती है, तो उसे भैंस से भी घटिया मान लिया जाता है। 'परिवर्तन की बात' कहानी का पात्र हरिप्रसाद कहता है कि - " अरे कैसी गऊमाता.....? भैंस माता कहो अब तो"[१] वह अपनी बात को जारी रखते हुए फिर कहता है, "भैंस दूध अधिक देती है, भला गाय कहाँ ठहरती है, भैंस के आगे"[2] धर्म के ठेकेदारों ने हजारों वर्षो से ब्राह्मणवादी समाज व्यवस्था में दलितों को अशिक्षित बनाए रखा । दलितों को निरक्षर होने के कारण धर्म के नाम पर मूर्ख बनाया गया। कहानी 'प्राण-प्रतिष्ठा' में मन्दिर के पुजारी से जब कथाकार पूछता है कि क्या सच में प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है तथा मूर्ति को दहीं-दूध से धोने का अर्थ पूछने पर मन्दिर का पुजारी ब्राह्मण उत्तर में कहता है - "उस मूर्ति को हम लोग दूध गंगाजल आदि से धोकर इसीलिए पवित्र करते हैं कि भगवान की उसी मूर्ति को बनाने वाले अछूत वह नीच जाति के लोग होते हैं । जाने किस-किस भंगी, कुम्हार या चमार के हाथ उस मूर्ति पर लगते हैं । बस इसलिए इस मूर्ति को दूध और गंगाजल से धोकर पवित्र किया जाता है।"[3] डॉ.बाबा साहब अंबेड़कर को दलितों का उद्धारक कहा जाता है । सही अर्थो में अंबेडकर दलितों के मसीहा है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

अंबेड़कर के कारण की आज दलितों-पीड़ितों को जीवन जीने की उर्जा मीली है । इसीलिए 'घाटे का सौदा' कहानी की अनपढ़ आनन्दी मुग्ध भाव से अम्बेड़कर के फोटो को निहारती रहती है और कहती है - "रजनी, तुम्हारे पापा अगर गाँव की जहालत से उठकर यहाँ तक आ पहुँचे हैं तो इसके पीछे इस महान व्यक्ति के जीवन संघर्षो का प्रतिफल ही है । वरना ये भी किसी चौधरी या ठाकुर के खेतों में हल चला रहे होते।"[4]

डॉ.बाबा साहेब ने राष्ट्र-समाज और नेताओं को इस बात का अहसास दिलाने का प्रयत्न किया कि दलितपन भारत के लिए कलंक है । जब तक दलितों का शोषण होता रहेगा, तब तक उनका अपमान किया जाता रहेगा, उनसे छुआछूत बढ़ती जाएगी, जब तक उनको मानवीय हक नहीं दिए जाएँगे, तब तक उनके साथ मनुष्यवत समानता का व्यवहार नहीं किया जाएगा और आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का जीवन प्राप्त नहीं होगा, तब तक वे समाज की मुख्यधारा से नहीं बच सकते । और जब तक दलित वर्ग समाज की मुख्यधारा से नहीं जुड़ता तब तक देश ओर प्रगति नहीं कर सकेगा । डॉ.बाबा साहेब ने दलितो को केवल सामाजिक न्याय ही नहीं दिलाया बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी सक्रिय किया । उन्होंने दलित समाज को राजनीतिक दृष्टि से संगठित करने व उनमें अपने अधिकारों के लिए लड़ने का साहस पैदा किया । आजादी के कई दशकों के बाद भी दलित का शोषण ही होता आया है । सरकारी अफसर या पुलीस भी दलितों को ही परेशान करती है । 'परिवर्तन की बात' कहानी का पात्र किसना मरी गाय को जब उठाने से इनकार कर देता है तथा रघु ठाकुर के धमकाने पर भी टस से मस नहीं होता तो रघु ठाकुर पुलिस अधिकारी दारोगा को बुलाकर किसना की पिटाई करवा देता है । बिना जुर्म के किसना बहुत मार खाता है, और जहाँ तक हो सके खामोश रहने की कोशिश करता है । उसे खामोश देख दरोगा फायदा उठाते हुए कहता है कि - "सालो तुम लोग मरे जानवर नहीं उठाओगे तो गाँव की व्यवस्था ही बिगड़ जाएगी ।"[5] इसप्रकार नेताओं से लेकर सरकारी कार्यालयों तक हर एक विभाग में दलितों को नीचे दबाया जाता रहा है । आज के सत्तालोलुप राजनेता दलितों का सिर्फ वोटबैंक के लिए ही इस्तेमाल करते है । वोट के लिए किसी भी हद तक जा सकते है । 'छूत कर दिया' कहानी का बिहारी ऊँची शिक्षा प्राप्त करके गाँव आता है, तब पहले तो ग्राम प्रधान उनसे मिलने नहीं जाता है । किन्तु चुनाव सर पर होने के कारण वह बिहारी को आदर्श पुरुष मानकर गाँव के भंगी-चमारों के वोट लेना चाहता है । इसलिए वह सोचता है - "बिहारी को मंच पर बुलाकर स्वागत करने में गाँव भर के दलित प्रसन्न हो जाएँगे । वे समझेंगे कि एक पढ़े-लिखे दलित युवा का स्वागत ग्राम-प्रधान व कमेटी सदस्यों ने किया है तो निश्चय ही बहुत बड़ा सम्मान दिया है । ऐसा करने से मुझे अगले चुनाव में ग्रामप्रधान

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

का पद फिर बड़ी आसानी से मिल जाएगा ।"[6] दलितों मे थोड़ी सी राजनीतिक चेतना आने पर सवर्ण लोग किसी प्रकार उनके इस परिवर्तन को बर्दाश्त नहीं कर पाते । 'साजिश' कहानी में कथानायक नत्थू जब ट्रांसपोर्ट का धंधा खोलने के लिए सरकारी लोन लेने जाता है तब वहाँ का बैंक मैनेजर उसे धोखे से पिगरी लोन लेने की सलाह देकर वापस घर भेज देता है । पर नत्थू अपने दलित भाईयों को साथ लेकर आता है तथा उसकी पत्नी भी साथ आती है और पिगरी लोन लेने का विरोध करते है तब बैंक मैनेजर रामसाय अपने बड़े बाबू सतीश को कहता है कि - "सर वही नत्थू को जो ट्रान्सपोर्ट का लोन न देकर पिगरी लोन दिया था, उसने बड़ा झमेला खड़ा कर दिया । साला पालिटिक्स मारने लगा है सर । अपनी औरत को भी नेता बना के ले आया है । थोड़ा पढ़ क्या गए ये लोग, सर, अब सर पर हाथ रखने लगे हैं । हैं तो साले नीच जात, पर होड़ लगाते हैं ब्राह्मण बनिया से।"[7]

हमारे देश में सदियों से सवर्णो ने दलितों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं । उनके धर्म के अनुसार दलित लोग धन प्राप्त नहीं कर सकतें, क्योंकि ऐसा करना पाप माना गया हैं, और साथ ही साथ आज तक दलितों को आर्थिक विकास में ऊपर नहीं उठने दिया हैं, सरकार ने दलितों के लिए आरक्षण के रूप में कुछ सुविधाएँ दी हैं, ऐसी सुविधाओं पर सवर्ण लोग जलते हैं । सवर्णो को दलितों का विकास बर्दाश्त नहीं है, दलितों की उन्नति उन्हें चुभती है । चौहान जी की कहानी 'जलन' में कथा नायक तेजा बैंक से सूअर के व्यापार को शुरू करने के लिए कुछ लोन लेता है, तथा उसकी मेहनत और लगन से उसका व्यापार जोर-शोर से चलता भी है, समाज में उसकी वाह-वाह भी होती है, छप्पर का घर तोड़कर वह पक्का घर भी बनवा लेता है । तेजा का यूँ ही तेजी से विकास ठाकुरों को सहन नहीं होता और गाँव के सभी ठाकुरों मिलकर तेजा पर षड़यंत्र रचते हैं । तथा बैठक में वे सरकार की बुराई भी करते हैं । उसी में से एक पण्डित रामनाथ चिल्लाते हुए बोलता है - "सत्यानाश हो सरकार का । चूहड़े-चमारों के लिए ऋण की व्यवस्था की है, इस सरकार से इन्हें तरह-तरह की सुविधाएँ दी जा रहीं हैं । तेजा को देखो कल तक कच्ची कुठरिया व फूस के छप्पर में रहने वाला, आज पक्की हवेली बनाकर हमारे सामने सीना तानकर रह रहा है । मेरा तो इसकी खुशहाली देशकर सीना फटने को हो रहा है । बहुत बुरा समय आ गया है लोग इज्जत करना ही भूल गए है ।"[8]हमारे देश में कुछ हद तक दलित शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़े होना चाहते हैं, पर यह सवर्णों को कतई मंजूर नहीं होता है, वे चाहते हैं कि अभी भी दलित उनके पुश्तैनी धंधों जैसे झाड़ू लगाना, नालियाँ साफ करना आदि में लगे रहें । इसीलिए 'जलन' कहानी के नायक तेजा को आर्थिक हानि पहुँचाने के लिए ठाकुर नेतासिंह अपने ही कुएँ में एक सूअर को मारकर फेंकवा देते हैं, तथा सारे गाँव में इस बात का हल्ला कर देते हैं, यह सब तेजा ने

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

किया है । ठाकुरों के नेता नेतासिंह कुएँ के पास अपने बिरादरी के लोगों को कहता है - " अरे देखा तुमने, तेजा चूहड़े की जेब में दो पैसे क्या आ गए उसने हमारा कुँआ ही अपवित्र कर दिया । धर्म भ्रष्ट कर दिया, इस तेजा ने रात को चुपके से आकर सूअर का बच्चा डाल दिया हमारे कुएँ में ।"[9]

भारतीय सामाजिक इतिहास में वर्ण व्यवस्था का विशेष महत्व है । जन्म से मृत्यु पर्यन्त प्रत्येक हिन्दू के विभिन्न संस्कृति वर्ण भेद के अनुसार ही होते हैं । उनके राजनैतिक, आर्थिक परिवर्तन हुए हैं नए-नए धर्मों की उन्नति और अवनति होती रही, परन्तु वर्ण-व्यवस्था का लोप न हो सका । यह आज भी अपने नए रुप के साथ विद्यमान है । सूरजपाल चौहान की कहानियाँ दलित समाज जीवन की दशा एवं रुप पर अधिक ध्यान केन्द्रित करती है । उन्होंनें अपनी कहानियों में दलित शोषण, उच्च वर्ण की रूढ़िवादिता, दलितों में चेतना का भाव, सवर्णों की मानसिकता, दलित नारी शोषण, दलित नारी शिक्षा, दलित नारी चेतना, आदि का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण किया है । 'अपना-अपना धर्म' कहानी में सांगवान के चाचा लीलाधर दलित समाज की उन्नति के लिए दलितों के बच्चों को लिखाने और पढ़ाने का कार्य कर रहा था । पर गाँव के सवर्ण ठाकुरों के आँखों में धूल गिर जाती हैं । वे लोग बेचैन होकर लीलाधर की हत्या कर बैठते हैं और कहते हैं - "हमने लीलाधर की हत्या करके कोई अपराध नहीं किया है । वह धर्म विरुद्ध कार्य कर रहा था, छोटी जाति में जन्म लेकर उसे पढ़ना-लिखना नहीं चाहिए था ।"[10]सवर्ण दलितों के गरीब होने के कारण, अशिक्षित होने के कारण उनका फायदा उठाते आये हैं और उठा रहे है । 'चेता का उपकार' कहानी में कथानायक चेता ठाकुर जिलेसिंह के घर पर कम पैसे में सारा दिन बेगारी करता है, और घर के छोटे से बड़े काम सभी उसी के जिम्मे होते हैं । परन्तु एक बार जिलेसिंह बेवजह उसकी खूब पिटाई करते हुए कहता है कि- " चूहड़े चमारों को मारने के लिए भी किसी अपराध की जरूरत है भला । इन सालों का तो काम ही है पिटाई खाना।"[11]

'हैरी कब आएगा' में संग्रहित कुछ कहानियों में सूरजपाल जी ने दलित नारी चेतना को भी मुखरित किया है । हमारे देश में कई सालों से पुरुष ने सत्ता का उपयोग किया है तथा उसने आज तक नारी को हीन बना रखा है । स्त्री के जीवन के बारे में डॉ.बाबा साहेब अम्बेड़कर का मानना है कि भारतीय समाज-व्यवस्था मे स्त्री दलितों से भी दलित है । इस व्यवस्था ने न केवल उसकी अस्मिता को नकारा है बल्कि उसे हमेशा दूसरा दर्जा दिया है । उसका प्रवेश ज्ञान से लेकर धर्म तक वर्जित था । हजारों वर्षों से वह दासत्वपूर्ण जीवन जी रही थी । समाज चार वर्णो में बँटा है तथा स्त्री को पाँचवे वर्ग में माना गया है । और उसमें भी अगर स्त्री दलित जाति की हो तो फिर बात ही क्या करे ? दलित स्त्री सवर्ण के कुएँ से

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

पानी तक भर नहीं सकती । 'टिल्लू का पोता' कहानी में सोनपुर की कमला अपने पति और बच्चों के साथ अपने गाँव सोनपुर एक विवाह समारोह में जाती हैं, और रास्ते पर बच्चों को कड़ी धूप के कारण प्यास लगने पर वे एक सवर्ण के खेत में पानी पीने के लिए जाते है । जैसे ही वे कुएँ से पानी निकालकर पीने वाले थे तभी एक सवर्ण बूढ़ा जोर से चिल्लाते हुए उनकी जाति के बारे में पूछताछ करता है, और कहता है कि वह स्वयं उन्हें पानी निकालकर पिलाएगा । तब स्वमानी कमला अपनी नारी चेतना का परिचय देते हुए अपने बच्चों से कहती है कि - "चलो ये पानी नहीं, जहर है । अपने घर जाकर पिएँगे, नहीं चाहिए आपका इतना मीठा पानी ।"[12]

संक्षेप में, सूरजपाल चौहान लिखित 'हैरी कब आएगा' कहानीसंग्रह में समाविष्ट कहानियों में मनुवादी व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह, आक्रोश, दलित-व्यथा, भोगे हुए यथार्थ, सामन्त आतंक और अत्याचार का विरोध मुखर है । सूरजपाल की कहानियों पर सरसरी नजर डालने पर हम यह समझ सकते हैं कि देश की उन्नति, देश के विकास के लिए हमें सबसे पहले जाति व्यवस्था को मिटाना होगा । भारत अगर अविकसित है तो उसका एकमात्र कारण जोंक की तरह चिपकी जाति व्यवस्था । डिजिटल इन्डिया की बात बाद की है, पहले जरूरी है जातिवाद को मिटाना, और इसके लिए जरूरी है मानसिकता में बदलाव लाना अन्यथा यह उद्देश्य धरा का धरा रह जाएगा ।

सन्दर्भ -

१. हैरी कब आएगा - सूरजपाल चोहान - अनुभव प्रकाशन, साहिबाबाद -२०१००५, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश, प्रथम संस्करण - १९९९- पृ.१७
२. वही - पृ.१८
३. वही - पृ.८०
४. वही, पृ.३३
५. वही, पृ.२३
६. वही, पृ.२९
७. वही, पृ.४२
८. वही, पृ.६४
९. वही, पृ.६६
१०. वही, पृ.८२
११. वही, पृ.४७
१२. वही, पृ.२६

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

सम्पर्क : डॉ.अमितभाई एन.पटेल
आसीसटन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जीएलएस (सद्गुणा एण्ड बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स,
सीटी केम्पस, लालदरवाजा, अहमदाबाद-०१
चलभाष :9925267715/ 9727497201
Email: amitnpatel1682@gmail.com